In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

Ref/زیرحوالہ **415**

Date/تاریخ **31-03-2025**

ईद उल-फितर हमदर्दी का संदेश लेकर आया है

मानवता से हमदर्दी करना बड़ी इबादत, यह अल्लाह की रज़ा पाने का बेहतरीन मार्ग - हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

रमज़ान के बरकतों भरे समापन पर मुसलमान अल्लाह की इबादत करते हुए ईद उल-फितर मनाते हैं। सलामती, हमदर्दी, ग़रीबों की सेवा और मानवता से प्रेम ऐसे गुण हैं जो रमज़ान की बरकतों से हमें प्राप्त होते हैं। पवित्र माह रमज़ान में हमें जो भी नेमतें और सीख मिलीं, उन्हें अपने जीवन में अपनाने की कोशिश करनी चाहिए, और इन्हीं बरकतों के शुक्राने का दिन ईद है, जो हज़ारों खुशियों के साथ हमारे जीवन में आती है।

इस्लामी शिक्षाओं की विशेषता यह है कि इसमें अल्लाह के हक़ अदा करने के साथ-साथ उसकी मख़लूक़ (सृष्टि) की सेवा करने का भी आदेश दिया गया है। मानवता से सहानुभूति और दान, जिसे सदक़ातुल-फितर कहा जाता है, हर मुसलमान के लिए अनिवार्य किया गया है ताकि ग़रीब भी ईद की खुशी में शामिल हो सकें। एक मुसलमान की सच्ची ईद तभी होगी जब वह अपनी खुशियां ग़रीबों के साथ साझा करेगा।

जमाअत अहमदिया के संस्थापक हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने फरमाया कि "मानवता से हमदर्दी करना सबसे बड़ी इबादत है, जो अल्लाह की रज़ा पाने का बेहतरीन मार्ग है।"

जमाअत अहमदिया के रूहानी ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ईद के संदर्भ में फरमाते हैं:

"ईद वाले दिन केवल त्योहार मनाने के लिए हम इकट्ठा नहीं होते, बल्कि अल्लाह ने हमें जो ज़िम्मेदारियाँ सौंपी हैं, उन्हें आम दिनों से भी बढ़कर अदा करना आवश्यक होता है। हमें अपनी इबादतों का हक़ भी अदा करना चाहिए और बंदों के हक़ भी अदा करने की ज़िम्मेदारी हर मोमिन पर है।"

इसी तरह हज़रत मिर्ज़ा मसरोर अहमद साहिब फरमाते हैं:

"अगर हम अल्लाह तआला के आदेशों का पालन करते हुए, हक़ूक़ुल्लाह (अल्लाह के अधिकार) तो अदा करें लेकिन हक़ूक़ुल इबाद (बंदों के अधिकार) पूरा न करें, तो हम अल्लाह तआला के आदेश से दूर जा रहे होंगे। लेकिन अगर हम यह करेंगे, तो यह हमारी मग़फ़िरत (क्षमा) का ज़रिया भी बनेगा, और हम शैतान के चंगुल से निकलकर खुद को आग (नरक) से भी बचा रहे होंगे। और यही वह सच्ची ईद है, जिसे एक मोमिन चाहता है।"

अहमदिया मुस्लिम जमाअत भारत, ईद के इस पावन अवसर पर सभी देशवासियों को ईद की मुबारकबाद पेश करती है और देश की एकता, अखंडता, तरक्की और शांति के लिए दुआ करती है।

Tariq Ahmad K
Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.